2 जुलाई 2011, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये
जी-जागरण पर
प्रतिदिन प्रातः
6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 34, अंक : 7 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जुलाई (प्रथम), 2011 (वीर नि. संवत्-2537) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

देशभर में बाल संस्कार शिविरों की धूम

मई व जून माह में पूरे देश में बाल संस्कार शिविरों के माध्यम से अभूतपूर्व तत्त्वप्रचार हुआ। पिछले अंक में ग्वालियर, रत्नागिरी, द्रोणगिरी व दिल्ली के समाचार प्रकाशित किये जा चुके हैं। अब यहाँ जयपुर, भिण्ड, जबलपुर, जसवंतनगर, पिड़ावा, दिल्ली, नागपुर एवं नौगांव में लगाए गए बाल संस्कार शिविर के संक्षिप्त समाचार प्रकाशित किये जा रहे हैं। इन शिविरों में हजारों बालक-बालिकाओं में जैनत्व के संस्कारों का बीजारोपण किया गया। बालकों के अतिरिक्त हजारों साधर्मियों ने भी धर्मलाभ लिया।

1. भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ से के.के.पी.पी.एस. उज्जैन, श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट देवनगर भिण्ड एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा देवनगर भिण्ड के संयुक्त तत्त्वावधान में 115 स्थानों पर दिनांक 2 से 10 जून एवं 12 से 20 जून तक दो सत्रों में सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर, श्री आदिनाथ विद्या निकेतन मंगलायतन अलीगढ़, श्री अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा एवं श्री कुन्दकुन्द विद्या निकेतन सोनागिर के कुल 146 विद्वानों द्वारा जैनधर्म के संस्कारों का बीजारोपण किया गया।

115 स्थानों पर एक साथ आयोजित इन सामूहिक शिक्षण शिविरों में लगभग 25 हजार साधर्मियों ने जैनत्व के संस्कारों को ग्रहण किया।

शिविर के प्रथम सत्र में 97 स्थानों पर एवं द्वितीय सत्र में इन्दौर के 14 स्थानों, कोलारस के 2 स्थानों पर तथा नरवर व लुकवासा में उक्त शिविर के माध्यम से अभूतपूर्व तत्त्वप्रचार किया गया।

इन्दौर के सभी स्थानों का निरीक्षण ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा किया गया। **- सुरेशचंद जैन**

2. जयपुर (राज.) : यहाँ मालवीय नगर सेक्टर -7 में श्री नथमलजी झांझरी परिवार की ओर से दिनांक 1 से 12 जून तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित नवीनजी शास्त्री जयपुर, पण्डित मनीषजी कहान जयपुर, श्रीमती आरती जैन जयपुर एवं श्री सौम्य जैन जयपुर द्वारा प्रतिदिन प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। शिविर के बीच में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित रमेशचंदजी जैन लवाणवालों के विशेष प्रवचन का लाभ भी मिला।

विशेष उपलब्धि यह रही कि यहाँ श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय के सहयोग से प्रत्येक रविवार को प्रवचन हेतु विद्वान की व्यवस्था की गई।

3. जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ अ.भा.जैन युवा फैडरेशन जबलपुर द्वारा ग्रीष्मकालीन अवकाश के अवसर पर दिनांक 31 मई से 7 जून तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का उद्घाटन श्री नरेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर द्वारा ध्वजारोहणपूर्वक हुआ। उद्घाटन सभा के मुख्य अतिथि फैडरेशन के मध्यप्रदेश प्रांत के अध्यक्ष श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर थे।

शिविर के मुख्य आयोजक के रूप में श्री अशोकजी जैन दिगम्बर परिवार के साथ श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई एवं शास्त्री सुगंधी परिवार जबलपुर का सहयोग प्राप्त हुआ।

इस शिविर में जबलपुर एवं आसपास के गांवों के लगभग 450 बालक-बालिकाओं ने सहभागिता की।

सायंकालीन कार्यक्रमों में जिनेन्द्र भक्ति के बाद विभिन्न कार्यक्रमों के अन्तर्गत संगीतमय कथा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रोजेक्टर पर बाल गीत विडियो, कत्लखानों में होने वाले अत्याचार आदि का प्रदर्शन, प्रतिभा विकास की प्रतियोगितायें संचालित की गईं। 12 कक्षाओं के संचालन में पण्डित सुदीपजी शास्त्री बरगी, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़, पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर, पण्डित निपुणजी शास्त्री सरदारशहर, पण्डित विशेषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित सुकुमालजी शास्त्री नागपुर, श्रीमती स्वस्ति जैन देवलाली के अतिरिक्त स्थानीय विद्वान श्री मनोजजी जैन, श्री श्रेणिकजी जैन, श्रीमती कान्ति जैन, श्रीमती अलका जैन, श्रीमती पूजा जैन का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। सामूहिक कक्षा के साथ शिविर के सम्पूर्ण कार्यक्रमों में पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

यह शिविर जबलपुर मंडल के सभी सदस्यों के तन-मन-धन समर्पण के साथ फैडरेशन के युवा और समर्पित अध्यक्ष श्री संजयजी जैन, श्री अनुभवजी जैन और डॉ. मनोजजी जैन के अथक परिश्रम से शिविर सफल रहा।

(शेष पृष्ठ 4 पर...)

सम्पादकीय - 59

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

- पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा- ९१

विगत गाथा में आकाश द्रव्य का स्वरूप कहा।

अब प्रस्तुत गाथा में यह बताते हैं कि अलोकाकाश छहों द्रव्य रूप लोक के बाहर भी है। मूल गाथा इसप्रकार है -

जीवा पोग्गलकाया धम्माधम्मा य लोगदो णण्णा।
तत्ते अणण्णमण्णं आयासं अन्तवदिरित्तं ।।९१।।

(हरिगीत)

जीव पुद्गल काय धर्म अधर्म लोक अनन्य हैं।
अन्त रहित आकाश इनसे अनन्य भी अर अन्य भी ।।९१।।

जीव, पुद्गलकाय, धर्म, अधर्म तथा काल लोक से अनन्य हैं तथा अन्तरहित आकाश लोक से अनन्य भी तथा अन्य भी है।

टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्र स्पष्टीकरण करते हुए कहते हैं कि यह लोक के बाहर जो अनन्त आकाश है, उसकी सूचना है। वे जीवादि द्रव्य मर्यादित होने के कारण लोक से अनन्य ही हैं; और आकाश अनन्त होने के कारण लोक से अनन्य भी है और अन्य भी।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं -

(सवैया इकतीसा)

जीव है असंख्य परदेसी एक लोकमान,
पुद्गल अनन्त सो भी लोक परिमित है।
धर्माधर्म-दोनों असंख्य परदेसी हैं,
औ असंख्य अनु-काल लोक माहिं थित हैं।।
तातैं ए दरब न्यारे लोक माहिं परे सारे,
इनतैं अनन्य लोक किया नाहीं नित हैं।
तातैं परे हैं अनन्त एक नभ सुद्धवंत,
अन्यभाव तामैं वसै ज्ञानी कै उदित हैं ।।४०४।।

(दोहा)

लोक थकी बाहिर परा, सकल अलोकाकास।
अगम अपार अनंत है, निज गुन-परजै-वास ।।४०५ ।।

निम्न पद्यों में हीरानन्दजी कहते हैं कि जीव असंख्य प्रदेशी हैं एवं लोक प्रमाण हैं, पुद्गल अनन्त हैं, वे भी लोक प्रमाण ही हैं। धर्म व अधर्म दोनों द्रव्य भी असंख्य प्रदेशी हैं तथा कालाणु लोक प्रमाण ही हैं। एक मात्र अलोकाकाश ऐसा है जो लोक में भी है और लोक बाहर अलोक में भी है।

इसी गाथा पर प्रवचन करते हुए गुरुदेवश्री कानजीस्वामी कहते हैं कि ''आकाश एक अखण्ड द्रव्य होते हुए भी लोक व अलोक के भेद दो प्रकार कहा गया है। आकाश के जितने भाग में जीवादि छहों द्रव्य हैं, वह लोकाकाश, शेष जहाँ केवल आकाश ही आकाश है वह अलोकाकाश है। जिस भाग में छः द्रव्य हैं, वह असंख्य प्रदेशी तथा शेष आकाश अनन्त प्रदेशी हैं।

प्रश्न : असंख्य प्रदेशी लोकाकास में अनन्त जीव एवं अनन्तानंत पुद्गलादि द्रव्य कैसे समाते होंगे?

उत्तर : असंख्यप्रदेशी आकाश में सहज अवगाहना स्वभाव है, इस कारण अनन्त जीवादि समा जाते हैं वस्तु का स्वभाव वचन गम्य नहीं है। जैसे - एक घर में अनेक दीपों का प्रकाश जमा जाता है, उसी प्रकार आकाश में ऐसी अवगाहन शक्ति है।

इसी शक्ति से अनन्त चेतन व जड़ पदार्थों को एक ही समय अवकास दे देता है। ऐसी भी क्षमता है कि अनन्त परमाणु सूक्ष्म रूप से परिणमन करें तो एक प्रदेश में समा जाते हैं।

इसप्रकार इस गाथा में आकाश द्रव्य की अवगाहन शक्ति की चर्चा की। •

गाथा- ९२

विगत गाथा में कहा गया है कि आकाश के अतिरिक्त शेष पाँच द्रव्य मर्यादित स्वभाव के कारण लोक से अनन्य ही हैं तथा आकाश अनन्त होने के कारण अनन्य भी हैं और अन्य भी हैं।

अब इस गाथा में कहते हैं कि यदि आप आकाश को गति-स्थिति में हेतु मानेंगे तो सिद्धों को लोकान्त में ही ठहरने का अभाव सिद्ध होगा। मूल गाथा इसप्रकार है -

आगासं अवगासं गमणट्ठिदिकारणेहिं देदि जदि।
उड्ढंगदिप्पधाणा सिद्धा चिट्ठन्ति किध तत्थ।।९२।।

(हरिगीत)

अवकाश हेतु नभ यदि गति-थिति कारण भी बने।
तो ऊर्ध्वगामी आत्मा लोकान्त में जा क्यों रुके ।।९२।।

यदि आकाश अवकास का हेतु भी हो एवं गति-स्थिति का हेतु भी हो तो ऊर्द्धगति करनेवाले सिद्ध लोकाकाश के अन्त में क्यों स्थिर हों? उत्तर में कहा है कि जिनवरों ने सिद्धों को लोकाग्र में स्थिति कहा है। इसलिए सिद्धों की गति अलोकाकाश में नहीं होती।

टीकाकार आचार्य अमृतचंद्रदेव कहते हैं कि यह जीवादि द्रव्यों की स्थिति-सम्बन्धी कथन है। लोक और अलोक का विभाग करनेवाले लोक में स्थित धर्म तथा अधर्म द्रव्य को ही गति व स्थिति में हेतु माना गया है। अतः सिद्ध लोकाग्र में ही स्थिर होते हैं।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं कि -

(दोहा)

ज्यौं अवकास अकास-गुन, त्यौं जग गतिथिति होइ।
सिद्ध उर्द्धगति सहजतैं, सिवमैं रहै न कोइ।।४०६।।

(सवैया इकतीसा)

जैसैं आकास दरव जीव और पुग्गलकौं,
अवकास देनवाला सदाकाल हत है।
तैसैं जीव पुग्गलकै चलने रहनेकौं भी,
करता अकास जौ पै कारन महत है।।
तौ पै कहौ कैसैं रहै ऊरध सुभाव-गत,
सिद्ध सिद्ध अलोकविषैं आगै क्यों न गत है।
नभ तौ सहायकारी आतमा विहारधारी,
सारी बात विभचारी श्रीजिनेस मत है।।४०७।।

(दोहा)

जैसैं सब आकासमैं, गुन अवकास अखंड।
गति-थिति-कारन है नहीं, वस्तुरूप बल चंड।।४०८।।

कवि हीरानन्दजी कहते हैं कि जिसप्रकार आकाशद्रव्य में अवकाश देने का गुण है, वैसे ही जीव पुद्गलों को गति व स्थिति देने निमित्तरूप बनने का धर्मद्रव्य व अधर्मद्रव्य में गुण है। आकाशद्रव्य में गतिस्थिति में निमित्त बनने का गुण नहीं है। इसकारण सिद्ध जीव अलोक में नहीं जाते।

इसका स्पष्टीकरण करते हुए अपने व्याख्यान में गुरुदेव श्रीकानजी स्वामी कहते हैं कि इस गाथा में यह भेदज्ञान कराया है कि आकाश द्रव्य से धर्म-अधर्म द्रव्य जुदे हैं। आकाश द्रव्य में गति स्थिति में निमित्त होने का गुण नहीं है। इस कारण धर्म-अधर्म द्रव्य का काम आकाश द्रव्य नहीं कर सकता। ऐसा कहकर भेदज्ञान कराया है। पंचास्तिकाय का ज्ञान भेदज्ञान का कारण है। इसमें दृष्टि का विषय आ जाता है।

इसप्रकार संक्षेप में लोक-अलोक का ज्ञान कराया है। ●

गाथा- ९३

विगत गाथा में कहा गया है कि आकाश द्रव्य में गति स्थिति हेतुत्व होने की शंका निरर्थक है; क्योंकि फिर जीव को अनन्त आकाश में अनन्तकाल तक का प्रसंग आयेगा। जो कि असंभव है।

अब प्रस्तुत गाथा में कहते हैं कि जिनवरों ने सिद्धों की लोकांत में स्थिति कही है, इसलिए गति-स्थित अलोकाकाश में नहीं है।

मूल गाथा इसप्रकार है -

जम्हा उवरिट्ठाणं सिद्धाणं जिणवरेहिं पण्णत्तं।
तम्हा गमणट्ठाणं आयासे जाण णत्थि त्ति।।९३।।

(हरिगीत)

लोकान्त में तो रहे आत्मा अष्ट कर्म अभाव कर।
तो सिद्ध है कि नभ गति-थिति हेतु होता है नहीं।।९३।।

जिससे जिनवरों ने सिद्धों की लोक के ऊपर स्थिति कही है, इसलिए गति-स्थिति आकाश में नहीं होती - ऐसा जानो।

आचार्य अमृतचन्द्रदेव ने भी विशेष कुछ न कहकर मात्र यही कहा कि सिद्धभगवन्त गमन करके लोक के ऊपर (लोकाग्र में) स्थिर होते हैं; क्योंकि आकाशद्रव्य गति हेतुत्व नहीं है। लोक व अलोक का विभाग करनेवाले धर्मद्रव्य व अधर्मद्रव्य ही गति-स्थिति में निमित्त होते हैं।

कवि हीरानन्दजी अपनी काव्य की भाषा में कहते हैं कि -

(दोहा)

जो सिद्धालै सिद्ध हैं, और कहूँ नहि जाहिं।
तो गतिथिति आकास-गुण, निहचै जानौं नाहिं।।४०९।।

(सवैया इकतीसा)

जातैं कर्मनास भये ऊरध स्वभाव सेती,
सिद्धजीव जाय जाय सिद्धगति वासी है।
सदाकाल रहै तामैं और ठौर नाहीं भामै,
निर्विभाग सुद्ध एक जोति परगासी है।।
तातैं ऐसा निहचै सौं जानिए प्रसिद्धनभ,
चालै राखै नाहिं काहू अवकास रासी है।
गतिथान कौं निमित्त धर्माधर्म दौनौं लसे,
वस्तु सीमा जैसी तैसी सांची दृष्टि भासी है।।४१०।।

जो सिद्धालय में सिद्ध है वे अन्यत्र कहीं नहीं जाते, इसलिए यह निश्चय है कि गति व स्थिति आकाश का गुण नहीं है। गति-स्थिति में धर्म व अधर्मद्रव्य निमित्त होते हैं जो अलोकाकाश में नहीं है। अतः सिद्ध लोकान्त में ही रहते हैं।

इस गाथा के स्पष्टीकरण में अपने व्याख्यान में गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी कहते हैं कि इसगाथा में कहा गया है कि आकाश से धर्म-अधर्म भिन्न हैं, इसलिए वहाँ तक क्षेत्रान्तर होने में तथा ठहरने में निमित्तरूप होने का गुण आकाश द्रव्य में नहीं है। आकाश के गुण से धर्म-अधर्म द्रव्य के गुण जुदे हैं।

यहाँ शिष्य पूछता है कि आकाश द्रव्य ही चेतन व अचेतन पुद्गल के गमन में निमित्त हों तो क्या बाधा है?

उत्तर में गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी कहते हैं कि यदि सिद्ध भगवान का अलोकाकाश में हो तथा आकाश में गति-स्थिति में निमित्त बनने का गुण तो यह संभव है। आकाश धर्म-अधर्म में निमित्त बनने का गुण ही नहीं है अतः यह बात संभव कैसे हो सकती है। धर्म-अधर्म द्रव्य भी आलोक में जाने का गुण नहीं है। अतः लोक के द्रव्य लोक में ही हैं। यह सिद्ध हुआ।

धर्म-अधर्म द्रव्य से लोक-अलोक का विभाग पड़ता है। धर्म-अधर्म द्रव्यों को न माने तो लोक-अलोक की सिद्धि नहीं होती।

लोक-अलोक को व धर्म-अधर्म द्रव्यों को न जाने तो ज्ञान मिथ्या ठहरता है।

इसप्रकार जो व्यक्ति धर्म-अधर्म द्रव्य को नहीं मानते; उनके समाधान किए। ●

(पृष्ठ 1 का शेष...)

पुरस्कार वितरण में श्री सुनीलजी जैन पायलवाला और श्री जितेन्द्रजी जैन का सहयोग प्राप्त हुआ। इस अवसर पर 2012 के बाल संस्कार शिविर के आयोजक के रूप में श्री बाबूलालजी जैन रूपाली परिवार और शिविर कुबेर श्री स्वदेशजी शास्त्री सुगंधी परिवार ने शिविर का आमंत्रण दिया।

– श्रेणिक जैन

4. जसवंतनगर-इटावा (उ.प्र.) : यहाँ दिनांक 3 से 10 जून तक स्थानीय महिला मुमुक्षु मण्डल के सहयोग से बाल संस्कार शिक्षण शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री छिन्दवाड़ा ने बालवर्ग प्रथम, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड ने बालवर्ग द्वितीय, पण्डित सचिनजी खनियांधाना ने किशोर वर्ग एवं कु. सपना जैन ने शिशु वर्ग की कक्षा ली।

शिविर में सैंकड़ों बालकों एवं साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

शिविर के अन्त में दिनांक 10 जून को श्री राजीवजी जैन की अध्यक्षता में समापन समारोह आयोजित किया गया। सभी शिविरार्थियों को श्रीमती रेखा जैन व श्रीमती लता जैन द्वारा पुरस्कृत किया गया। आभार प्रदर्शन श्री धनेशचंदजी जैन (शिविर प्रभारी) ने किया।

शिविर के पूर्व दिनांक 26 मई से पण्डित सचिनजी खनियांधाना द्वारा प्रात: प्रवचनसार का सार पर तत्त्वचर्चा, दोपहर में चौदह गुणस्थान एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक का सार पर प्रवचनों का लाभ प्राप्त हो रहा है।

5. पिड़ावा (राज.) : यहाँ दिनांक 6 से 14 जून तक बाल संस्कार शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी द्वारा दोनों समय ग्रन्थाधिराज समयसार एवं मोक्षमार्गप्रकाशक के आधार पर प्रवचनों का एवं अन्त के तीन दिन में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा विधान पर प्रासंगिक प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। इनके अतिरिक्त पण्डित चिन्मयजी शास्त्री, पण्डित रविजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित सन्मतिजी शास्त्री, पण्डित शौर्यजी शास्त्री मण्डाना, पण्डित विरलजी जैन मंगलार्थी, पण्डित रमेशजी जैन लाम्बाखोह आदि विद्वानों द्वारा कक्षायें संचालित की गयी।

शिविर में 200-300 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया, साथ ही बाल कक्षाओं में भी लगभग 200 बच्चे सम्मिलित हुये।

इस अवसर पर तीन लोक मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा एवं पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा द्वारा सम्पन्न कराये गये।

6. दिल्ली : यहाँ शिवाजी पार्क स्थित श्री शांतिनाथ दि.जैन मंदिर में दिनांक 23 से 31 मई तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित अशोकजी जैन, पण्डित अभिषेकजी जैन, पण्डित विकासजी शास्त्री बानपुर द्वारा कक्षाएं ली गईं, जिनका अनेकों बालकों एवं साधर्मियों ने लाभ लिया।

शिविर में रत्नत्रय विधान एवं सम्मेदशिखर विधान भी संपन्न हुआ।

संपूर्ण कार्यक्रम का निर्देशन श्री पृथ्वीचंदजी जैन (ताऊजी)ने किया।

7. नागपुर (महा.) : यहाँ अ.भा. जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में दिनांक 11 से 19 जून तक 14वाँ बाल युवा संस्कार सामूहिक शिक्षण शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर विदर्भ प्रांत के नागपुर, यवतमाल, अकोला, रामटेक, चंद्रपुर, गणेशपुर, काटोल, शेंदुर्जनाघाट, जरुड, वरुड, हिवरखेड, पाला, नेरपिंगलई, विरुर, रोंघे, आर्वी, चांदूर रेल्वे, मुर्तिजापुर, बोरगांवमंजू एवं मध्यप्रदेश के सिवनी, बाबई आदि 27 स्थानों पर तत्त्वज्ञान की गंगा बहायी गयी।

शिविर संचालन में पण्डित फूलचंदजी मुक्कीरवार हिंगोली, पण्डित नंदकिशोरजी मांगुलकर शास्त्री काटोल, पण्डित श्रेणीकजी जैन जबलपुर, पण्डित श्रुतेशजी सातपुते नागपुर, पण्डित विनीतजी शास्त्री ग्वालियर, पण्डित पीयूषजी सिंगतकर चंद्रपुर, पण्डित रवींद्रजी महाजन वसमतनगर, पण्डित आदेशजी बोरालकर सेनगांव, पण्डित सुकुमारजी शास्त्री कोल्हापुर, पण्डित अभिषेकजी जोगी गजपंथा, पण्डित प्रकाशजी उकलकर गोवर्धन, पण्डित पवनजी शेंडे शिरपुर, पण्डित जयेशजी रोकडे मालेगांव, पण्डित पंकजजी संघई हिंगोली, पण्डित संदेशजी बोरालकर कलमनूरी, पण्डित साकेतजी जैन जयपुर, पण्डित भूषणजी विटालकर शेंदुर्जनाघाट, पण्डित विवेकजी गडेकर हिवरखेड, पण्डित कुलभूषणजी वाकले वाशिम, पण्डित चेतनजी भुसारी नागपुर, पण्डित सुरेशजी बेलोकर विहिगांव, पण्डित अक्षयजी चव्हाण बांसवाडा, पण्डित राजकुमारजी चव्हाण बांसवाडा, पण्डित प्रदीपजी धोत्रे बांसवाडा, पण्डित अभिषेकजी नेजकर, पण्डित बाहुबलीजी चौगुले, पण्डित शुभमजी जैन, पण्डित करणजी शास्त्री कोल्हापुर, पण्डित कुलभूषणजी आंबेकर, पण्डित संकेतजी बोरालकर, पण्डित अमोलजी महाजन, विदुषी स्वर्णलता जैन नागपुर, विदुषी सौ. सुनीता जैन नागपुर, विदुषी शकुन सिंघई नागपुर इत्यादि विद्वानों का सहयोग प्राप्त हुआ।

इस शिविर के माध्यम से लगभग 2000 बच्चों ने जैनधर्म के संस्कार ग्रहण किये।

दिनांक 19 जून को नागपुर में वीतराग-विज्ञान भवन में शिविर का सामूहिक समापन समारोह किया गया।

8. नौगांव (म.प्र.) : यहाँ जैनत्व शिक्षण समिति, नौगांव एवं कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 2 से 10 जून तक बुन्देलखण्ड के 21 स्थानों पर जैनत्व बाल एवं युवा संस्कार शिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

इस अवसर पर 29 विद्वानों द्वारा तत्त्वज्ञान की अविरल धारा बहायी गयी। शिविर में लगभग 1200 बच्चों ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये। इनके अतिरिक्त लगभग 600 साधर्मियों ने भी धर्मलाभ लिया।

शिविर का समापन समारोह दिनांक 10 जून को अतिशय क्षेत्र खजुराहो में रखा गया। समारोह की अध्यक्षता श्री शिखरचंदजी जैन (अध्यक्ष-खजुराहो कमिटी) ने की एवं प्रमुख विद्वान के रूप में श्री सुरेशचंदजी टीकमगढ (पिपरा वाले) उपस्थित थे।

शिविर का संयोजन पण्डित राहुलजी शास्त्री नौगांव, पण्डित रजितजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित जयेशजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित आकाशजी शास्त्री खनियांधाना ने किया।

दो ही लगेज

अपनी यात्रा में
ज्यादा से ज्यादा
आप दो ही लगेज ले जा सकते हैं
हाथ दो ही जो हैं आपके
तीसरा आप उठाना चाहें
तो भी उठा नहीं सकते
फिर वह आपके
सिर या कंधे पर सवार हो जायेगा
तब वह लगेज नहीं
बल्कि बोझ बन जायेगा
और आप यात्री नहीं
बोझ ढोनेवाले कुली।
बोझ तो पशु ढोते हैं
अगले भव की यात्रा में
आप भी भावकर्म और द्रव्यकर्म
ये दो ही कर्म साथ ले जा सकते हैं
तीसरा नोकर्म तो हरगिज नहीं।
माफ कीजिये कुली जैसी कोई सुविधा
इस प्लेटफार्म/स्टेशन पर (संसरण में)
उपलब्ध नहीं है।
भवभ्रमण का लगेज
हे भव्य ! कुछ तो कम करो,
थोड़ा हल्का हो जाओ,
कम सामान सफर आसान
बहु आरंभ परिग्रहत्व तो
नरकगति का कारण हे
और अल्प आरंभ परिग्रहत्व
मनुष्यगति का।
देव नहीं तो मनुष्य तो बनो।

– बाहुबलि भोसगे

श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट द्वारा –

गुणस्थान विवेचन वर्ष

साधना नगर-इन्दौर (म.प्र.) में श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट द्वारा 2011-2012 को गुणस्थान विवेचन वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। जो साधर्मीजन इन कक्षाओं का लाभ लेना चाहते हैं, वे श्री विजयजी बड़जात्या से मो.नं. 09425066838 पर संपर्क करें। गुणस्थान विवेचन वर्ष में गुणस्थान की कक्षा लेने हेतु ब्र.यशपालजी जैन द्वारा स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। उनका कार्यक्रम तय होने पर उसकी जानकारी यथासमय सभी को भेजी जायेगी।

ज्ञातव्य है कि 2007-08 को द्रव्य-गुण-पर्याय वर्ष, 2008-09 को छहढाला वर्ष, 2009-10 को तत्त्वार्थसूत्र वर्ष, 2010-11 को पुरुषार्थसिद्ध्युपाय वर्ष के रूप में मनाया जा चुका है।

ब्र.यशपालजी द्वारा तत्त्वप्रचार

कोहेफिजा-भोपाल (म.प्र.) में दिनांक 3 से 18 जून तक प्रतिदिन दोनों समय क्षयोपशम आदि पंचलब्धि एवं लब्धिसार के आधार से कक्षायें चली। कठिन एवं अपरिचित विषय होने पर भी लोगों ने उत्साहपूर्वक कक्षाओं का लाभ लिया। कक्षा में प्रथमोपशम सम्यक्त्व का प्रकरण पूर्ण हुआ एवं क्षायिक सम्यक्त्व का प्रकरण प्रारंभ हुआ। लोगों ने भविष्य में भी आने का निमंत्रण दिया है।

नवीन प्रकाशन - जैन भूगोल

डॉ. श्रीमती उज्ज्वला शहा लिखित 'जैनभूगोल' शीघ्र प्रकाशित हो रही है। 240 पृष्ठ तथा 16 रंगीन चार्ट्स सहित यह पुस्तक पोस्टेज सहित 75/- रुपये में निम्न पते पर प्राप्त करें -

1. वीतरागवाणी प्रकाशक, पण्डित दिनेशभाई शहा, 157/9 निर्मला निवास, सायन (पूर्व), मुम्बई - 400022, टेलि. - 022/24073581

2. वीतरागवाणी प्रकाशक, श्री उदय शाह C/O महति इलेक्ट्रोनिक्स, 32/33 शंकर शेठ रोड़, पुणे - 411037, टेलि. - 020/40100400

श्री टोडरमल स्मारक भवन के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हेतु –

आमंत्रण रथ का प्रवर्तन प्रारंभ

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में फरवरी-2012 में होने वाले पंचकल्याणक के प्रचार-प्रसार हेतु दिनांक 26 जून को पंचकल्याणक आमंत्रण रथ प्रवर्तन प्रारंभ किया गया।

इस मंगल अवसर पर ब्र.यशपालजी जैन एवं पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा द्वारा रथ पर स्वस्ति बनाकर रथ का शुभारंभ श्री टोडरमल महाविद्यालय के समस्त छात्रों की उपस्थिति में भजनादि प्रस्तुत करते हुए धूमधाम से किया गया।

रथ के साथ पण्डित करणजी शाह बड़ौदरा, पण्डित मनोजजी जैन चीनी वाले मुजफ्फरनगर, पण्डित मधुवनजी मुजफ्फरनगर आदि विद्वान उपस्थित हैं। दिनांक 5 जुलाई से पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली भी सम्मिलित होंगे।

यह रथ दिनांक 27 जून को प्रात: रुड़की, दिनांक 28 जून को ऋषिकेश एवं 29 जून को देहरादून पहुँचा। रथ का सभी जगह अपूर्व उत्साह के साथ स्वागत किया गया और सभी जगह कलश आदि की बुकिंग के रूप में भरपूर राशियों के वचन भी संस्था को प्राप्त हुये। अब यह रथ सहारनपुर, ननोता, नकुड़, सरसावा, देवबंद, कांदला, गंगेरु, मुजफ्फरनगर, खतौली, मेरठ, सरधना, बागपत, अमीनगर सराय, खेकड़ा, छपरौली, बड़ौत होते हुए लगभग दिनांक 20 जुलाई को जयपुर आएगा। इसप्रकार यह रथ पूरे देश के मुख्य-मुख्य स्थानों पर भ्रमण कर साधर्मीभाइयों के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में जयपुर आने हेतु निमंत्रण देगा।

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

77 इक्कीसवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

तत्त्वविचार की महिमा बताते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

''देखो, तत्त्वविचार की महिमा ! तत्त्वविचाररहित देवादिक की प्रतीति करे, बहुत शास्त्रों का अभ्यास करे, व्रतादिक पाले, तपश्चरणादि करे, उसको तो सम्यक्त्व होने का अधिकार नहीं और तत्त्वविचारवाला इनके बिना भी सम्यक्त्व का अधिकारी होता है।[१]''

इसप्रकार सम्यक्त्व के सन्मुख मिथ्यादृष्टियों का कथन किया। इस प्रकरण का समापन करते हुए पण्डितजी लिखते हैं –

''यहाँ नानाप्रकार के मिथ्यादृष्टियों का कथन किया है। उसका प्रयोजन यह जानना कि उन प्रकारों को पहिचानकर अपने में दोष हो तो उसे दूर करके सम्यक् श्रद्धानी होना, औरों के ही ऐसे दोष देख-देखकर कषायी नहीं होना; क्योंकि अपना भला-बुरा तो अपने परिणामों से है। औरों को तो रुचिवान देखें तो कुछ उपदेश देकर उनका भी भला करें।

इसलिए अपने परिणाम सुधारने का उपाय करना योग्य है; सर्वप्रकार के मिथ्यात्वभाव छोड़कर सम्यग्दृष्टि होना योग्य है; क्योंकि संसार का मूल मिथ्यात्व है, मिथ्यात्व के समान अन्य पाप नहीं है।[२]''

उक्त कथन को सातवें अधिकार का समापन वाक्य भी मान सकते हैं और चौथे अधिकार से लेकर सातवें अधिकार तक के प्रकरण का समापन वाक्य भी मान सकते हैं; क्योंकि **मिथ्यात्व का निरूपण चौथे अधिकार से आरंभ हुआ है और सातवें अधिकार के उपरान्त समाप्त हुआ है।**

चौथे अधिकार में अगृहीत मिथ्यात्व अर्थात् अगृहीत मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र का निरूपण है और **पाँचवें से सातवें अधिकार तक गृहीत मिथ्यात्व अर्थात् मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र का वर्णन है। पाँचवें अधिकार में** अजैनों की अपेक्षा, **छठवें अधिकार में** जैनों में प्रचलित विभिन्न प्रकार के देवी-देवताओं अर्थात् कुदेव, कुगुरु और कुधर्म की अपेक्षा और **सातवें अधिकार में** तत्त्वाभ्यासी जैनों की अपेक्षा निरूपण है।

इसप्रकार हम देखते हैं कि मिथ्यात्व के संदर्भ में जहाँ-जहाँ जिस-जिस अपेक्षा सावधानी अपेक्षित है, लगभग सभी को यहाँ समाहित कर लिया गया है।

उक्त समापन वाक्य में पण्डित टोडरमलजी अपने पाठकों को अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में आदेश दे रहे हैं, अनुरोध कर रहे हैं कि उनके द्वारा निरूपित मिथ्यात्व के प्रकारों का प्रयोजन तो यह है कि यदि **तुममें इसप्रकार के दोष हों, तुम इसप्रकार की गलतियाँ कर रहे हो तो इसे पढकर उन्हें निकाल कर सन्मार्ग में लग जाना। दूसरों की गलतियाँ निकालने में इस प्रतिपादन का उपयोग नहीं करना; क्योंकि अपना कल्याण तो स्वयं को मिथ्यात्व से मुक्त करने में ही है।**

यदि अन्य साधर्मी भाई-बहिन भी रुचिवंत हों, तत्त्वाभ्यास करना चाहते हों; तो उन्हें भी मिथ्यात्व से बचने में यथासंभव सहयोग करें, वस्तुस्वरूप समझाने का समुचित प्रयास करें; किन्तु **जो समझना ही नहीं चाहते, उनसे उलझकर अपने समय और शक्ति का अपव्यय नहीं करें।**

पण्डित टोडरमलजी साहब ने अत्यन्त करुणा करके आपके हित का यह कार्य अपनी जान की बाजी लगा कर किया है, उन्हें इसी प्रतिपादन के फलस्वरूप साम्प्रदायिक वैमनस्य का शिकार होकर जीवन से हाथ धोने पड़े। उनके इस अनंत उपकार के प्रति अत्यन्त कृतज्ञ होकर हमें अपने हित के लिए उनके इस अन्तिम आदेश का पालन अवश्य करना चाहिए; **दूसरों की भलाई-बुराई में न उलझकर अपने शेष जीवन को आध्यात्मिक शास्त्रों के स्वाध्याय में लगाना चाहिए।** •

इक्कीसवाँ प्रवचन

यह मोक्षमार्गप्रकाशक का आठवाँ अधिकार है। इसमें उपदेश के स्वरूप पर विचार किया गया है। उपदेश संबंधी कार्य की महानता और उपदेश के स्वरूप के प्रतिपादन की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए पण्डित टोडरमलजी आरंभ में ही लिखते हैं –

''अब मिथ्यादृष्टि जीवों को मोक्षमार्ग का उपदेश देकर उनका उपकार करना यही उत्तम उपकार है। तीर्थंकर, गणधरादिक भी ऐसा ही उपकार करते हैं; इसलिए इस शास्त्र में भी उन्हीं के उपदेशानुसार उपदेश देते हैं। वहाँ उपदेश का स्वरूप जानने के अर्थ कुछ व्याख्यान करते हैं; क्योंकि उपदेश को यथावत् न पहिचाने तो अन्यथा मानकर विपरीत प्रवर्तन करे। इसलिए उपदेश का स्वरूप कहते हैं।[१]''

उपदेश के कार्य को हम हीन कार्य समझ कर उससे विरक्त न हो जावें – इसलिए वे हमें समझाते हैं कि **यह उपकार ही सर्वोत्तम उपकार है और ऐसा उपकार तो तीर्थंकर और गणधरदेव**

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २६० २.वही, पृष्ठ २६६-२६७

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, आठवाँ अधिकार, पृष्ठ २६०

भी करते हैं।

यह कार्य करनेवाले को जहाँ एक ओर इस बात का गौरव होना चाहिए कि हम वह कार्य कर रहे हैं, जो तीर्थंकरों ने किया था, गणधरों ने किया था; वहीं दूसरी ओर सतर्क और सावधान रहने की भी आवश्यकता है; क्योंकि **हमारी जरा-सी असावधानी तीर्थंकरों के परम पवित्र मार्ग को विकृत कर सकती है।**

यहाँ एक प्रश्न हो सकता है कि हम ऐसा कार्य ही क्यों करें कि जिसमें तीर्थंकरों के मार्ग के विकृत होने के अवसर हों।

अरे, भाई ! यदि ऐसा ही हमारे धर्मपूर्वज सोचते तो यह मार्ग हमें भी कैसे प्राप्त होता ? तीर्थंकरों के मार्ग को सुरक्षित रखने के लिए, देशना लब्धि के अवसर सतत् विद्यमान रहें – इसके लिए उपदेशरूप कार्य से सर्वथा विरत रहना ठीक नहीं है; **आत्मकल्याण की प्रमुखतापूर्वक परहित की कामना से सन्मार्ग को आगे बढाने में सहयोग करना अनुचित नहीं है, अपितु एक आवश्यक कार्य है।**

इसप्रकार हम देखते हैं कि यदि आत्मकल्याण परमावश्यक कार्य है तो उपदेश की निरन्तरता बनाये रखना भी एक आवश्यक कार्य है।

यह तो आप जानते ही हैं कि णमोकार महामंत्र में सिद्धों से पहले अरहंतों को नमस्कार किया गया है। महानता में तो सिद्ध बड़े हैं; क्योंकि उन्होंने आठों कर्मों का अभाव कर दिया है, वे देह से भी मुक्त हो गये हैं; किन्तु उनसे उपदेश का लाभ प्राप्त नहीं होता; परन्तु अरहंतों की दिव्यध्वनि का लाभ सभी को प्राप्त होता है। उक्त उपकार के कारण ही णमोकार मंत्र में उन्हें प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है।

यह हमारा महाभाग्य है कि हमें तीर्थंकरों, गणधरों, आचार्यों और सभी ज्ञानियों की बात को आगे बढाने का अवसर प्राप्त हुआ है। उनके द्वारा बताये गये तत्त्वज्ञान का ही यह प्रताप है कि हजारों लोग हमारी बात सुनने को सदा तैयार रहते हैं, हमारी पुस्तकों को पढने के लिए तत्पर हैं।

अरे, भाई ! इस जमाने में कौन किसकी सुनता है ? दश–पाँच आदमी तो इकट्ठा करके देखो। भोजन रखो, चूरमा–बाटी खिलाओ; तो भी लोगों को जोड़ना मुश्किल है।

खाने–पीने के लिए जुड़ भी जावेंगे तो खा–पीकर चल देंगे, आपकी बात नहीं सुनेंगे; पर हमारी बात बिना कुछ लिये–दिये सुनते हैं, सुनने को लालायित रहते हैं; क्योंकि हमारे पास तीर्थंकरों का तत्त्वज्ञान है।

यह सब प्रताप तीर्थंकरों के तत्त्वज्ञान का ही है; जो हमें जिनागम के स्वाध्याय से प्राप्त हुआ है, गुरुदेवश्री के सत्समागम से प्राप्त हुआ है, जिसे हमने तर्क की कसौटी पर कसकर परखा है और अपने अनुभव से प्रमाणित कर जगत के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं।

आचार्य कुन्दकुन्द और आचार्य अमृतचन्द्र ने यही आदेश दिया है, यही विधि बताई है।[१]

जिनागम में वस्तुस्वरूप प्रतिपादन करने की अपनी एक शैली है। जबतक हम उसे नहीं जानेंगे, नहीं पहिचानेगे; तबतक हम जिनागम के मर्म को नहीं जान सकते। अत: हमें जिनागम का अभ्यास करने के पहले उसकी प्रतिपादन शैली को जानना चाहिए, पहिचानना चाहिए।

जब एक बालक रात को साढे नौ बजे घर आता है और माँ को आवाज देकर किवाड़ खोलने का अनुरोध करता है तो माँ पूछती है –

''अबतक कहाँ थे, घर आने में इतनी देर क्यों हुई ?''

जब सहमते हुए बालक कहता है कि सिनेमा देखने गये थे तो माँ एकदम नाराज हो उठती है। कहती है –

''यदि सिनेमा जाना था तो पूछा क्यों नहीं ?''

''अब पूछे बिना कभी नहीं जावेंगे, आज तो किवाड़ खोल दो।''

बालक के ऐसा कहने पर झल्लाते हुए माँ कहती है –

''नहीं, नहीं; जावो ! और दूसरा शो भी देख आओ।''

ऐसा सुनकर बालक ऐसा नहीं समझता कि आज तो माँ बहुत खुश है, जो दूसरा शो देखने के लिए कह रही है; अपितु यही समझता है कि माँ बहुत नाराज है और इस भाषा में नाराजी ही व्यक्त कर रही है।

वह ऐसा नहीं कहता कि दूसरा शो देखने जाना है तो टिकिट के लिए पैसे दे दो; पर यही कहता है कि नहीं, नहीं; अब बिना पूछे कभी भी नहीं जाऊँगा।

तब डाँटते हुए माँ कहती है – ''नहीं, नहीं; जावो दूसरा शो देखना और वही सिनेमाघर में ही सो जाना।''

अब तो बात पूरी तरह स्पष्ट हो जाती है कि माँ बहुत–बहुत नाराज है और बालक बार–बार क्षमा याचना करने लगता है; क्योंकि वह अपनी माँ की बात करने की शैली से भलीभांति परिचित है।

इसीप्रकार जिनवाणी भी हमारी माता है। जिनवाणी माता के हृदय की बात जानने के लिए हमें उसकी कथन शैली को पहिचानना चाहिए, जानना चाहिए।

यही कारण है कि पण्डित टोडरमलजी यहाँ मुक्ति के मार्ग पर प्रकाश डालने के पूर्व जिनवाणी की कथन शैलियों का परिचय दे रहे हैं।

जिनागम में वस्तुस्वरूप को समझाने के लिए दो प्रकार की शैलियों को अपनाया गया है। एक है नयों की शैली और दूसरी है चार अनुयोग की शैली। नयों संबंधी शैली की चर्चा सातवें अधिकार के प्रसंग में हो चुकी है और चार अनुयोग संबंधी चर्चा इस अधिकार में होगी। (क्रमश:)

---

१. समयसार, गाथा ५ और उसकी आत्मख्याति टीका

व्यक्तित्व की पहचान

मिथिलापति महाराज जनक की राजसभा प्राय: शास्त्रों और श्रुतियों के विद्वानों से भरी रहती थी। एक बार महाराज जनक की सभा में एक ऋषिकुमार अष्टावक्र ने प्रवेश किया। अष्टावक्र के हाथ-पैर और पूरा शरीर टेड़ा-मेड़ा था, वे पैर रखते कहीं, तो पड़ते कहीं। मुख की आकृति तो और भी कुरूप थी। उनकी इस बेढंगी सूरत को देखकर सभा में उपस्थित सभी लोग हँस पड़े। अष्टावक्र ने क्रोध नहीं किया; बल्कि स्वयं भी हँसने लगे। महाराज जनक अपने आसन से उठे और उन्होंने हाथ जोड़कर अष्टावक्र से पूछा **''आप हँस क्यों रहे हैं ?''**

अष्टावक्र ने सभा की ओर संकेत करके पूछा, ''ये लोग किसलिए हँस रहे हैं ? **''हम लोग तो आपकी यह अटपटी आकृति देखकर हँस रहे हैं''** एक ब्राह्मण ने उत्तर दिया।

अष्टावक्र खिल-खिलाकर हँसे और अपनी हँसी का कारण बताते हुए बोले, मैंने सुना था, आपकी राजसभा में अनेक विद्वान एकत्र हुए हैं, इसलिए मैं आया था; किन्तु लगता है जैसे मैं विद्वान की परिषद में नहीं, चमारों की सभा में आ पहुँचा हूँ। यहाँ तो सब चमार हैं। यही मेरे हँसने का कारण है।

''ये सभी विद्वान हैं। चमार कह कर इनका अपमान करना आपको शोभा नहीं देता'' महाराज जनक ने कहा। अष्टावक्र बोले - **''जो चमड़े और हड्डियों को देखे-पहिचाने, वह चमार नहीं तो कौन है ? जबकि व्यक्तित्व की असली पहचान व्यक्ति के गुणों से होती है।''**

यह बात सुनकर उपस्थित विद्वानों के मस्तक शर्म से झुक गये।

संकलन - राजेश शास्त्री, शाहगढ

हार्दिक आमंत्रण

दिनांक 31 जुलाई से 9 अगस्त, 2011 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन होने जा रहा है। आप सभी को पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण।

जो महानुभाव शिविर का लाभ लेने हेतु जयपुर पधार रहे हैं, वे अपने आगमन की पूर्व सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें ताकि आवास व भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

आगामी कार्यक्रम ...

सम्मेदशिखर : यहाँ अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ का तृतीय राष्ट्रीय अधिवेशन 14 से 16 जुलाई 2011 को संपन्न होगा।

अधिवेशन की अध्यक्षता श्री रवीन्द्रजी मालव करेंगे।

अधिवेशन में जैन समाज की पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक, पत्रकार व लेखक बन्धु पधारकर विभिन्न सम-सामयिक विषयों पर चर्चा करेंगे।

इस अवसर पर अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ के अध्यक्ष का आगामी कार्यकाल हेतु चुनाव भी होगा। आने वाले पत्रकारों हेतु आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था की गई है। अपने आने की अग्रिम सूचना सम्पादक संघ के कार्याध्यक्ष डॉ. चिरंजीलालजी बगड़ा (मोबा. नं. - 09331030556) को देवें।

स्मरण रहे कि पहले यह अधिवेशन 5 व 6 जून को मुम्बई में होना था परन्तु अपरिहार्य कारणों से इसे स्थगित कर दिया गया था।

- अखिल बंसल

शोक समाचार

1. दिल्ली निवासी बाबू जयप्रकाशजी जैन मेरठवालों का दिनांक 3 जून को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

2. थाणा (चावण्ड)-उदयपुर (राज.) निवासी श्री रौनक कुमार जैन पुत्र श्री नाथूलालजी जैन का दिनांक 8 जून को 17 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप ध्रुवधाम महाविद्यालय में कनिष्ठ उपाध्याय में अध्ययनरत थे।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही भावना है।

प्रकाशन तिथि : 28 जून 2011

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127